

سُورَةُ الْمَعَارِجِ

Surah 70 — Al-Ma'aarij (The Ascending Stairways) • Meccan • 44 Ayahs • Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ سَأَلَ سَائِلٌ بِعَذَابٍ ۚ وَاقِعٍ ۚ

एक माँगने वाले ने काफ़िरों के लिए होकर रहने वाले अज़ाब को माँगा

2

لِلْكَافِرِينَ لَيْسَ لَهُ ۚ دَافِعٌ ۚ

जिसको कोई टाल नहीं सकता

3

مِّنَ اللَّهِ ذِي الْمَعَارِجِ

जो दर्जे वाले खुदा की तरफ से (होने वाला) था

4

تَعْرُجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ فِي يَوْمٍ ۚ كَانَ مِقْدَارُهُ ۚ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ ۚ

जिसकी तरफ फ़रिश्ते और रूहुल अमीन चढ़ते हैं (और ये) एक दिन में इतनी मुसाफ़त तय करते हैं जिसका अन्दाज़ा पचास हजार बरस का होगा

5

فَأَصْبِرْ صَبْرًا ۚ جَمِيلًا

तो तुम अच्छी तरह इन तकलीफों को बरदाश्त करते रहो

6

إِنَّهُمْ يَرَوْنَهُ ۚ بَعِيدًا ۚ

वह (क़यामत) उनकी निगाह में बहुत दूर है

7

وَنَرَاهُ قَرِيبًا ۚ

और हमारी नज़र में नज़दीक है

8

يَوْمَ تَكُونُ السَّمَاءُ كَالْمُهْلِ

जिस दिन आसमान पिघले हुए ताँबे का सा हो जाएगा

9

وَتَكُونُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ

और पहाड़ धुनके हुए ऊन का सा

10

وَلَا يَسْأَلُ حَمِيمٌ حَمِيمًا^१

बावजूद कि एक दूसरे को देखते होंगे

11

يُبْصِرُونَهُمْ^२ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِي مِنْ عَذَابٍ يَوْمِئِذٍ^३ بِبَنِيهِ

कोई किसी दोस्त को न पूछेगा गुनेहगार तो आरजू करेगा कि काश उस दिन के अज़ाब के बदले उसके बेटों

12

وَصُحْبَتِهِ^४ وَأَخِيهِ

और उसकी बीवी और उसके भाई

13

وَفَصِيلَتِهِ الَّتِي تُؤَيِّهِ

और उसके कुनबे को जिसमें वह रहता था

14

وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا^५ ثُمَّ يُنْجِيهِ

और जितने आदमी ज़मीन पर हैं सब को ले ले और उसको छुटकारा दे दें

15

كَأَنَّهُ لَظَى^६ إِنَّهَا لَظَى

(मगर) ये हरगिज़ न होगा

16

نَزَّاعَةً ۚ لِلشَّوَى

जहन्नुम की वह भड़कती आग है कि खाल उधेड़ कर रख देगी

17

تَدْعُوا ۚ مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّى

(और) उन लोगों को अपनी तरफ बुलाती होगी

18

وَجَمَعَ فَأَوْعَى

जिन्होंने (दीन से) पीठ फेरी और मुँह मोड़ा और (माल जमा किया)

19

ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا

और बन्द कर रखा बेशक इन्सान बड़ा लालची पैदा हुआ है

20

إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ۚ

जब उसे तकलीफ छू भी गयी तो घबरा गया

21

وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا

और जब उसे ज़रा फरागी हासिल हुई तो बखील बन बैठा

22

إِلَّا الْمُصَلِّينَ

मगर जो लोग नमाज़ पढ़ते हैं

23

الَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ

जो अपनी नमाज़ का इल्तज़ाम रखते हैं

24

وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ [؟] مَّعْلُومٌ [؟]

और जिनके माल में माँगने वाले और न माँगने वाले के

25

لِلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ

लिए एक मुक्रर हिस्सा है

26

وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ

और जो लोग रोज़े जज़ा की तस्दीक करते हैं

27

وَالَّذِينَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُونَ

और जो लोग अपने परवरदिगार के अज़ाब से डरते रहते हैं

28

إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ [؟]

बेशक उनको परवरदिगार के अज़ाब से बेखौफ न होना चाहिए

29

وَالَّذِينَ هُمْ لِفُُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ

और जो लोग अपनी शर्मगाहों को अपनी बीवियों और अपनी लौन्डियों के सिवा से हिफाज़त करते हैं

30

إِلَّا عَلَىٰ أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ

तो इन लोगों की हरगिज़ मलामत न की जाएगी

31

فَمَنِ ابْتَغَىٰ وَرَاءَ ذَلِكَ فَاُؤْتِ [؟] لَّيْكَ هُمُ الْعَادُونَ

तो जो लोग उनके सिवा और के खास्तगार हों तो यही लोग हद से बढ़ जाने वाले हैं

32

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمْنَتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رِعُونَ

और जो लोग अपनी अमानतों और अहदों का लेहाज़ रखते हैं

33

وَالَّذِينَ هُمْ بِشَهَادَتِهِمْ قَائِمُونَ

और जो लोग अपनी यहादतों पर कायम रहते हैं

34

وَالَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُونَ

और जो लोग अपनी नमाज़ों का ख्याल रखते हैं

35

أَوْ لَيْسَ لَكَ فِي جَنَّةٍ مَّكَرْمُونَ

यही लोग बेहिश्त के बागों में इज्जत से रहेंगे

36

فَمَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا لَكَ قَبْلَكَ مُهْطِعِينَ

तो (ऐ रसूल) काफिरों को क्या हो गया है

37

عَنِ الْيَمِينِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِينَ

कि तुम्हारे पास गिरोह गिरोह दाहिने से बाएँ से दौड़े चले आ रहे हैं

38

أَيُّطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَنْ يُدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيمٍ

क्या इनमें से हर शख्स इस का मुतमइनी है कि चैन के बाग (बेहिश्त) में दाखिल होगा

39

كَلَّا إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُونَ

हरगिज़ नहीं हमने उनको जिस (गन्दी) चीज़ से पैदा किया ये लोग जानते हैं

40

فَلَا أُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ إِنَّا لَقَدِرُونَ

तो मैं मशरिकों और मगरिबों के परवरदिगार की कसम खाता हूँ कि हम ज़रूर इस बात की कुदरत रखते हैं

41

عَلَىٰ أَنْ نُبَدِّلَ خَيْرًا ۖ إِنَّ مِنْهُمْ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوقِينَ

कि उनके बदले उनसे बेहतर लोग ला (बसाएँ) और हम आजिज़ नहीं हैं

42

فَذَرَهُمْ يَخُوضُوا ۖ وَيَلْعَبُوا ۖ حَتَّىٰ يُلَاقُوا ۖ يَوْمَهُمُ الَّذِي يُوْعَدُونَ

तो तुम उनको छोड़ दो कि बातिल में पड़े खेलते रहें यहाँ तक कि जिस दिन का उनसे वायदा किया जाता है उनके सामने आ मौजूद हो

43

يَوْمَ يَخْرُجُونَ مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا ۖ إِنَّهُمْ إِلَىٰ نُصْبٍ ۖ يُؤْفَضُونَ

उसी दिन ये लोग कब्रों से निकल कर इस तरह दौड़ेंगे गोया वह किसी झन्डे की तरफ दौड़े चले जाते हैं

44

خُسْعَةً أَبْصَرَهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۖ ۚ ذَٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِي كَانُوا ۖ يُوْعَدُونَ

(निदामत से) उनकी आँखें झुकी होंगी उन पर रूसवाई छाई हुई होगी ये वही दिन है जिसका उनसे वायदा किया जाता था